International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 05-07-2021, Accepted: 18-07-2021, Published: 03-08-2021
Volume 7, Issue 4, 2021, Page No. 69-70

डॉ. लोहिया के सांस्कृतिक संबंधी विचार

डॉ. सुनीता कुमारी
इतिहास भूपेन्द्र नारायण मंडल, विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

सारांश
डॉ. लोहिया ने भारत की दासता के लिए जातिप्रथा को ही पूर्णरूपेण मुख्य कारण माना है। उन्होंने जातिगत समाप्ति को ही सच्चा मानव धर्म निरूपित किया है। जब छोटी द्विज जाति अपना मुँह फेरे हिन्दुस्तान की पिछड़ी जातियों की ओर, शूद्र, हरिजनों, औरतों, मुसलमानों और आदिवासियों की ओर तब जाति की चक्की टूटेगी, 85 प्रतिषत जनता का पूर्ण लकवा और 14 प्रतिषत का अर्थ लकवा खत्म होगा, शोषण का अन्त होगा और इतिहास में पहली बार हिन्दुस्तान के सभी लोग सबल होगें।

मूलशब्दः डॉ. लोहिया, सांस्कृतिक, विचार

प्रस्तावना

जीवन के बड़े तथ्य जैसे जन्म, मृत्यु, शादी–ब्याह, भोज और अन्य सभी रस में जाति
के चौखट में ही होती है। उसी जाति के लोग इन निर्णायक कामों में एक–दूसरे की
मदद करते है। ऐसे मौको पर दूसरी जातियों के लोग किनारे पर रहते है, अलग और जैसे वे तमाशबीन हो। इधर के दशकों में देश के कई हिस्सों में कुछ अन्तर्जातीय काम हुए है। इस तरह के काम भोज की छोटी रस्म की हद तक ही सीमित रहे और शादी– ब्याह और बच्चे होने के बड़े काम नहीं हुए। दूसरे, यह काम सिर्फ सतही तौर पर और भ्रान्तिजनक रूप में अन्तर्जातीय विवाह और भोज हो जाया करते है। सचमुच के सामूहिक काम के क्षेत्र में, ऊँची जाति और छोटी जाति के बीच अगर और ज्यादा नहीं, तो कम से कम हमेशा जैसा बड़ा भेद बना हुआ है। जब लोग अन्तर्जातीय विवाह इत्यादि की बात करते है, तो इनका मतलब सिर्फ ऊँची जाति के समुदायों के बीच विवाह से ही होता है।

वे आगे कहते है, ''भारतीय समाज के यदि हजारों नहीं तो सैकड़ों जाति में विभाजन से जिनका जितना राजनीतिक उतना ही सामाजिक महत्व है, साफ हो जाता है कि हिन्दुस्तान बार–बार विदेशी फौजों के सामने क्यों घुटने टेके है।

हिन्दुस्तान के इतिहास को गलत ढंग से पढ़ना अब भी जारी है। विदेशी हमलों के दुःखदायी सिलसिले को, जिसके सामने हिन्दुस्तान जनता पसर गयी, अंदरूनी झगड़ों का एकमात्र कारण है जाति। यह बात वाहियात है। वह 90 प्रतिशत आबादी को दर्शक बना कर छोड़ देती है, वास्तव में, देश की दारूपण दुर्घटनाओं के निरीह और लगभग पूरे उदासीन दर्शक। हजारों वर्षों के बावजूद जातियों चल रही है। उन्होंने कुछ लक्षणों और रीतियों को जन्म दिया है। एक तरह का छँटाव हो गया है जो सामाजिक रूप में भी उतना ही सार्थक है जितना कि सहज छँटाव के रूप में। व्यापार, दस्तकारी, खेती या प्रशासन के सिद्धांतों से सम्बन्धित कामकाज के हुनर पुष्तैनी हो गये है। कोई प्रतिभाशाली ही इनमें वास्तविक पैठ कर सकता है। हुनर के इस जातिगत निर्धारण से कोई यह भी उम्मीद कर सकता है कि ऐसे परम्परागत छँटवा से बहुत फायदे निकलेगे। यदि सभी हुनर से सम्मान, सामाजिक हैसियत मिलती या आर्थिक लाभ होता, तो ऐसा हो सकता था।

डॉ० लोहिया ने जाति अध्ययन और विनाष संघ का घोषणा पत्र तैयार किया था जिन्हें उनके जाति तोड़ों आंदोलन का अंग माना जा सकता है। घोषणा पत्र का प्रारूप इस प्रकार था–यह विश्वास करते हुए कि जाति–प्रथा ने हिन्दुस्तान की जनता में पाँच में चार हिस्सों को सार्वजनिक जीवन के क्षेत्र से बाहर कर दिया है और परम्परा, संस्था और विचार के जरिये इन्हें राष्ट्र के भाग्य–निर्माण की जिम्मेदारी से मुक्त कर दिया है। किसी दूसरी चीज से अधिक देश के बार–बार गुलाम होने का कारण जाति रही है क्योंकि ऊँची जाति के नेताओं में फूट के कारण जाति नहीं बल्कि नीची जाति के लोगों में उदासीनता के कारण हिन्दुस्तान ने एक के बाद एक विदेशी हमले के सामने घुटने टेके हैं।

डॉ० लोहिया के जाति तोड़ों विचार के पक्षघर डॉ० यतीन्द्र नाथ शर्मा ने अपने एक निबंध में लोहिया के विचार के पक्ष में जोरदार वकालत करते हुए लिखा है– समाजवाद सभी प्रकार की समानता पर निर्भर करता है। परंतु जाति समाज में विशमता का निर्माण करती है।

डॉ० लोहिया यह भी चाहते थे कि निम्न वर्ग में से प्रभावषाली नेतृत्व का सृजन किया जाये। उन्हीं के शब्दों में '' जरूरत इस बात की है शूद्रों में से ऐसा नेता निकले जो न तो जलनेवाली (ईर्ष्यालू) हो और न सिर झुकाने वाले हो बल्कि ऐसे ही जो नयी मानवता हासिल कर सके।' निम्न वर्ग में से नेतृत्व निकलने से सामाजिक परिवर्त्तन का प्रारंभ होने लगता है। बिना वर्त्तमान योग्यता का ख्याल किए इस वर्ग के लोगों को अधिक संख्या में नेतृत्व में लाना होगा। डॉ० लोहिया के अनुसार सच्चे समाजवाद की स्थापना के लिए राष्ट के नेतृत्व में परिवर्त्तन लाकर समानता स्थापित करने की शुरूवात की जा सकती है।

जाति प्रथा समाप्त करने के लिए निम्न वर्ग के लोगों में अधिकार भावना जागृत करने की आवश्यकता है। अधिकार भावना जगाने से निम्न वर्ग की जनता में यह विश्वास जागृत होगा कि ये हीन नहीं है। यह जाति प्रथा प्राकृतिक नहीं बल्कि मनुष्यकृत अर्थात् सामाजिक है इसलिए अधिकार भावना से यह जल्दी समाप्त हो सकती है। अधिकार भावना के साथ–साथ लोगों में नई चेतना का जागरण भी जरूरी है।

जाति सम्मिश्रण के लिये भी डॉ० लोहिया ने सुझाव दिये थे। जाति समाप्ति के लिये सहभोज व अन्तर्जातीय विवाहों को उन्होंने कारगर उपाय बताया। उन्होंने कहा था कि द्विज और शूद्र के बीच विवाह तथा सहभोज में सम्मिलित होने से इंकार करने वाले की प्रशासन और फौज में भर्ती के लिए अयोग्य माना जाने लगेगा तभी जाति पर सही मामले में हमला होगा। जाति को

मिटाने, लोगों को बराबरी का अवसर देने तथा शूद्र व निम्न वर्ग में जो योग्य हैं उन्हें ऊँचे स्थानों पर बैठने के लिए उनका बड़ी जाति के लोगों से आग्रह था। अन्तर्जातीय विवाह संबंध वालों की नौकरियों में प्राथमिकता देने के लिए सरकार से उनका आग्रह था।

डॉ० लोहिया ने सुझाव दिया कि धार्मिकजातियों को एक दूसरे के निकट लाने के लिए प्रभावपूर्ण धार्मिक सूक्तियों का प्रचार होना चाहिये। उनका कहना था कि साढ़े 5 एकड़ से नीचे के खाते वाले किसानों पर लगान माफ किया जाना चाहिये।

जाति समाप्ति के लिए कर्मकांड की व्यर्थता, कर्मकांड के आधार पर निर्मित श्रेष्ठता के असत्य तथा अंधी श्रद्धा की बुराईयों का जन साधारण में प्रचार होना चाहिये तथा इन व्यर्थताओं का जनता को विश्वास दिलाया जाना चाहिये। लोगों में धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण बनाने का प्रयत्न होना चाहिये। दलित वर्ग के लोगों का शोषण रोका जाना भी जरूरी है। इसके लिये डॉ० लोहिया ने जाति तोड़ों आंदोलन, जाति विनाश मेले तथा अनेक सहभोजों का आयोजन करवाया था। डॉ० लोहिया ने अपने प्रसिद्ध सप्तक्रांति दर्षन में जाति समस्या को प्रमुखता दी थी। उनका विष्वास था कि जबतक देश में जातिप्रथा समाप्त नहीं होगी तब तक यहाँ न तो समता पूर्ण समाज की रचना हो सकती है और न समाजवाद की।

डॉ० लोहिया ने भारत की दासता के लिए जाति प्रथा को ही पूर्णरूपेण मुख्य कारण माना है।

डॉ० लोहिया का मत हैं कि भारत में जातिभेद को बढ़ाने में ब्राह्मण एवं सामंतवाद की मुख्य भूमिका रही है, ये ही इस प्रथा के पोषक तत्व रहे हैं जब तक इनका उन्मूलन नहीं होगा जातिभेद दूर नहीं होगा इसी ने वर्णगत, आर्थिक, सामाजिक वैमनस्य की दीवारे खड़ी की हैं। इनका टूटना देशहित में आवश्यक है।

समय–समय पर देश में अन्यान्य साधु, संतों, विचारकों ने जातिगत बंधन को तोड़ने के प्रयास किए, किन्तु जाति उन्मूलन हेतु डॉ० लोहिया के प्रयास अकथनीय रहे हैं।

निष्कर्षतः उन्होंने जातिगत समाप्ति को ही सच्चा मानव धर्म निरूपित किया है। उनका मानना था कि जिस प्रकार सीजरवाद को समाप्त करने के लिए सीजर का अंत किया गया था उसी प्रकार जातिवाद को समाप्त करने के लिए जातिप्रथा का अंत आवश्यक हैं तब शोषण का अंत होगा और इतिहास में पहली बार हिन्दुस्तान के सभी लोग सबल होंगे।

संदर्भ सूची

1. राममनोहर लोहिया 'इतिहास चक्र'।
2. श्रीमति इन्दुमति केलकर, लोहिया कर्म और सिद्वांत, इलाहाबाद, 1983
3. लोहिया के विचार, ओंकार शरद, लोकभारती, इलाहाबाद।
4. ठाकुर कृष्णनन्दन, डॉ० राममनोहर लोहिया के आर्थिक, राजनीतिक एवं समाजिक विचार।
5. गैर–कांग्रेसवाद और समाजवाद, लोहिया प्रकाषक राधाकांत यादव, पटना।